वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

# VEDIC THOUGHTS

A perfect blend of Vedic Values and Modern Thinking

| Monthly Magazine | Issue 15 | Year 2 | Volume 3 | November, 2013 Chandigarh | Page 24 | मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 2 |
|---|---|---|---|---|---|---|

Contact: Bhartendu Sood, Publisher, Editor & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tele. 0172-2662870 (M.) 9217970381 E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

**विचार**

## धर्म उसी की रक्षा करता है जो धर्म को धारण करता है

महाभारत में एक बहुत सुन्दर प्रसंग आता है। कर्ण द्रोणाचार्य के मारे जाने के बाद कौरवों की सेना का संचालन कर रहे होते है। उस का सामना अर्जुन से हो रहा था। दोनो ही महारथी थे। किसी के लिये भी दूसरे को हराना आसान नहीं था। इतने में कर्ण के रथ के पहिये का चक्का बाहर आ जाता है। कर्ण युद्ध को रोक कर रथ के चकके को वापिस ठीक जगह लगाने के लिये नीचे उतर जाते हैं। अर्जुन भी अपने धनुष को नीचे उतार कर कर्ण के रथ के ठीक होने की प्रतीक्षा करता है। कृष्ण जो कि अर्जुन के सारथी थे यह सब देख रहे थे व समझ रहे थे। वह झट से बोले——" अर्जुन तुम ने धनुष को नीचे रख दिया? बाण क्यों नहीं चलाते? " हैरान, अर्जुन श्री कृष्ण को देखने लगा, ——" श्री कृष्ण ऐसी बात कैसे कह सकते हैं जो कि धर्म के विपरीत हो" वह अपने आप से बोला। फिर साहस कर के श्री कृष्ण से बोला,———" सखा आप देख नहीं रहे। कर्ण के रथ का पहिया खराब हो गया है और वह उस को ठीक कर रहा है। ऐसे में उस निहत्थे पर तीर चलाना क्या अधर्म न होगा" श्री कृष्ण झट से बोले——" हे अर्जुन, जिन लोगों ने धर्म को पहले ही मार दिया हो उनको धर्म का सहारा लेने का कोई अधिकार नहीं है। कर्ण अधर्म के ध्वज के नीचे युद्ध कर रहा है और सेनापति है। ऐसे व्यक्ति को मारना कोई अधर्म नहीं। धर्म उसी की रक्षा करता है जो स्वयं धर्म को धारण किये हुए है न की धर्म को तहस नहस करने वाले की। उठाओ अपना धनषु और कर्ण को मार दो " बाकी क्या हुआ हम सब जानते हैं। इस प्रसंग से स्पष्ट है जब मनुष्य धर्म को नही मानता या फिर निजी स्वार्थों के वशिभूत धर्म की अवेहलना करता है तो ऐसे में धर्म उसकी रक्षा नहीं करता '

अब महाभारत का एक और प्रसंग देखिये जो यह बताता है कि धर्म जिन के लिये सर्वोपरी है वह धर्म के लिये कुछ भी मूल्य चुका सकते हैं या बलिदान कर सकते हैं। महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। अश्वथामा इस लिये दुखी नहीं था कि उसके पिता द्रोणाचार्या युद्ध में

तीरगती को प्राप्त हुए थे। वह दुखी इस लिए था क्योंकि ऐक योजनावध तरीके से पाण्डवों ने मिलकर उनका वध किया था। वह पाण्डवों से अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिये तड़प रहा था। आधी रात का समय था। अश्वथामा को पता था कि पाण्डव अपने शयन कक्ष में गहरी नीन्द में सो रहे होंगे। वह पाण्डव पुत्र धर्ष्टाद्युमना, जिसने की उसके पिता द्रोण का बध किया था, समेत उनके सभी पुत्रों को जब वह गहरी निद्रा में सो रहे थे, मार कर अपने कोध की अग्नि को शांत कर लेता है और कृपाचार्य को अपनी करी की सूचना देकर वहां से चला जाता है। प्रातः पाण्डव और द्रोपदी जब अपने पुत्रो को मरा हुआ देखते हैं जो स्वभाविक तौर पर फूट –फूट कर रोते हुए विलाप करते हैं। अर्जुन व द्रोपदी रोते हुए युधिष्टर से कहते हैं————" क्या हमने इस सब के लिये यह युद्ध लड़ा व विजय प्राप्त की। युधिष्टर जो जवाब देते है उस से पता लगता है कि धर्म की रक्षा क्या चीज है———" मेरे अनुजो, में भी वैसे ही दुखी हूं जैसे आप सब हैं पर अगर हम यद्ध न लड़ते तो वह गलानी का जीवन इस से कहीं अधिक पीड़ा देने वाला होता। धर्म की रक्षा के लिये कोई भी मूल्य बहुत बड़ा नहीं।

परम पिता परमात्मा ने सृष्टि की आदि में सब मनुष्यों के हितार्थ वेद का ज्ञान (वेद अर्थात् ज्ञान) सब से पवित्र चार ऋषियों (अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा के द्वारा कमशः ऋक्, यजुः, साम और अथर्व) को प्रदान किया और कालांतर में वही ईश्वरप्रदत्त वेद–ज्ञान को धार्मिक महानुभावों ने सुरक्षित रखा और वह आज भी ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के नाम से प्रचलित और सुरक्षित हैं।

विश्व के सभी सुशिक्षित विद्वान लोग भी यही मानते हैं कि संसार का प्रथम ग्रंथ 'ऋग्वेद' है। प्रत्येक मनुष्य के गुण, कर्म और स्वभाव एक दूसरे से अलग–अलग होते हैं और यही कारण है कि जब से यह दुनिया बनी है तब से आज तक अच्छे लोगों के साथ बुरे लोग भी विद्यामान रहते हैं और आगे भविष्य में भी इसी प्रकार रहेंगे। कोई भी युग ऐसा नही था, न ही वर्तमान में है और न ही भविष्य में होगा, जब मात्र अच्छे लोग होंगे या केवल बुरे लोग रहेंगे। सतयुग, द्वापर, त्रेता और वर्तमान कलियुग, हर युग में दोनों ही प्रकार के लोग रहे हैं। हर युग में धर्म के साथ अधर्म रहा है और आगे भी रहेगा क्योंकि मनुष्य गलतियों का पुतला है।

जी हां! गलतियां केवल मनुष्य ही करता है, पशु नहीं करते क्योंकि पशु प्रकृति नियम का उलंघन नही कर सकते क्योंकि उनमें कर्म करने की स्वतंत्रता नही है जैसे कि मनुष्य में है। स्वतंत्रता के कारण मनुष्य गलतियों पर गलतियां करता है और विधि के विधानुसार अपने कर्मो का फल भोगता है।

धर्म हमें कर्म करने की सही जानकारी देता है मनुष्य जब धर्म के नियमों का पालन करता हुआ अपना जीवन यापन करता है तभी यह कहा जा सकता है कि वह धर्म की रक्षा कर रहा है। इसी तरह जब मनुष्य धर्म को नही जानता या फिर निजी स्वार्थो के वशिभूत धर्म की अवेहलना करता है तो ऐसे में धर्म उसकी रक्षा नहीं करता ' धर्मो रक्षति रक्षितः' अर्थात धर्म का पालन करने वाले व्यक्ति की (हर परिस्थिति में) धर्म ही रक्षा करता है। साधारण भाषा में धर्म का अर्थ हैं 'मनुष्य के लिये करने योग्य कर्म या कर्तव्य'।

मनुष्य का क्या कर्तव्य है, उसे क्या करना चाहिये या क्या नही करना चाहिये। दार्शनिक भाषा में 'धर्म' की परिभाषा आर्ष ग्रंथो के अनेक ऋषियों ने अपने–अपने शब्दों में की है परन्तु उन सब का तात्पर्य एक ही है जैसे 'धारणाद्धर्ममित्याहुः' अर्थात जिसके धारण करने से किसी वस्तु की स्थिति रहती है, उसे 'धर्म' कहते हैं। वैशिषिक दर्शन के अनुसार–

यतोऽभयुदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्म।

तात्पर्य यह है कि जिससे इस संसार में भोग और मृत्योपरान्त मोक्ष की सिद्धी हो वह धर्म है अर्थात जिससे इहलोक और परलोक सुधरता है वह धर्म है।

जो पक्षपातरहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्यागरुप आचार है, उसी का नाम 'धर्म' और इससे विपरीत जो पक्षपातपूर्ण अन्यायचरण, सत्य का त्याग और असत्य का ग्रहणरुप कर्म है, उसी को 'अधर्म' कहते है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में बहुत ही सरल शब्दों में बताया है कि 'धर्म वह है जिसमें परस्पर किसी का विरोध न हो अर्थात धर्म सार्वभौम है जिसका किसी विशेष देश, जाति तथा काल से खास संबंध नही होता। जो ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपातरहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिये ही मानने योग्य है, वह 'धर्म' कहलाता हैं।

जो न्यायचरण सबके हित का करना आदि कर्म हैं उनको 'धर्म' और जो अन्यायचरण सब के अहित के काम करने हैं उनको 'अधर्म' जानो (व्यवहारभानु)। धर्म की सरलता परिभाषा है कि 'स्वस्य च प्रियमात्मनः' अर्थात जैसा हमारी आत्मा को अच्छा लगे या व्यवहार आप अपने लिये दूसरों से चाहते हैं वैसा ही व्यवहार आप भी दूसरों से करें। ऐसा व्यवहार कदाचित न करें जैसा व्यवहार आप नहीं चाहते कि दूसरे आप के साथ कभी करें। बस यही धर्म है। अच्छा करोगे तो अच्छा पाओगे और बुरा करेंगे तो बुरा ही हाथ आएगा।

सम्पादकीय

# शौचालय पहले देवालय बाद में

चाहे बात एक ही हो पर उसका असर कहने वाले पर बहुत निर्भर करता है। आज से कुछ महीने पहले जब केन्द्रीय मन्त्री जयराम रमेश ने कहा था— "शौचालय पहले देवालय बाद में" तो इस बात पर बहुत बड़ा विवाद यह कहकर खड़ा कर दिया गया था कि यह धार्मिक भावना को ठेस पहुंचाने वाली बात है। पर आज यही बात जब लोकप्रियता के आकाश पर झूम रहे श्री नरेन्दर मोदी ने कही तो विवाद तो दूर सब ने उसका अनुमोदन किया।

परन्तु जो नरेन्दर मोदी ने कहा मैं उस से भी सहमत नहीं हूं। मेरा कहना है केवल शौचालय ही इस देश में चाहिये और देवालयों की कोई आवश्यकता नहीं। कारण ईश्वर प्राप्ति का सही स्थान हृदय है। सभी आत्मज्ञानियों ने हृदय में ही ईश्वर का साक्षत्कार किया हैं। इस किया को करने के लिये शान्त जगह की आवश्यकता है न कि देवालय की।

यह सच्चाई है जब कोई खुले स्थान पर मल मूत्र करता है तो आसपास का सारा वातावरण खराब होता है, उसे अपने आप भी हीन भावना का अनुभव होता है देखने वाले को तो खराब लगता ही है। इसका हल है—शौचालय। और आज जब कि भारत की आधी जनता यानी कि 70 करोड़ लोग खुले में ही मल मूत्र करते हैं तो शौचालय बनवाना एक धार्मिक व नैतिक कार्य मानना होगा। यह नैतिक कार्य तभी पूरा हो सकता है जब हम कुछ समय के लिये और देंवालय बनाना बन्द कर दें।

अब आतें हैं 'देवालय' पर। मान लिया किसी स्थान पर देवालय नहीं है। ऐसे में स्वभाविक है ईश्वर प्रेमी व्यक्ति खुले शान्त स्थान में भक्ति करेगा। इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है। हमारी वैदिक परम्परा कहती है, ईश्वर भक्ति के लिये खुला व शान्त स्थल ही सब से उतम है। सभी आत्मज्ञानियों ने ऐसे स्थान पर उपासना द्वारा ही ईश्वर को पाया है। कभी आप ने सुना है कि किसी ने देवालय में ईश्वर की प्राप्ति की। देवालय में तो सदैव मूर्ती पूजा व धार्मिक मनोरंजन होते रहें हैं। इन्ही देवालयों को सदैव लूटा गया है व इन्हीं देवालयों के लिये आन्तरिक लड़ाईयां व बाहरी आकमण होते रहें हैं। आज हमारा देश अमीर है फिर भी इसकी जनता जरूरी सहूलियतों से इसलिये वचिंत है क्योकि लाखों टन सोना जवाहारात इन देवालयों में दबे पड़े हैं। कौन नहीं जानता यह देवालय देवदासी प्रथा को जनम देने वाले हैं। इन देवालयों का प्रयोग ईश्वर साक्षत्कार को छोड़ देवियों को वशीभूत करने के लिये भी किया जाता रहा है। आसाराम की बात सुन ही ली होगी। यही नहीं बहुत से देवालयों में प्राणियों की बली देकर जीने का अधिकार छीना जाता है। इसलिये अच्छा न होगा हम देवालय बनाना बन्द करें और शौचालय ही बनायें।

मुण्डकोपनिषद मे कहा है——जो सर्वज्ञ व सर्वव्यापक है, जिसकी महिमा मूलोकादि सब स्थानों में है, जो प्राण व शरीर का संचालक है, जो अन्न आदि भोगों में विराजमान है उस ईश्वर को ज्ञानी लोग हृदय में स्थिर कर व जानकर साक्षत्कार करते हैं।

आज जब कि भारत की आधी जनता यानी कि 70 करोड़ लोग खुले में ही मल मूत्र करते हैं तो शौचालय बनवाना एक धार्मिक व नैतिक कार्य मानना होगा तभी इस देश का उधार है। यानी कि मन्दिर या समाजों में कमरे बनाने के स्थान पर गांवों मे शोचालय बनवायें।

खुले में मल मूत्र करना हमारी संस्कृति का अंग नहीं है। हड़प्पा के अवशेषों में 3 फुट डायामीटर व 5 फुट गहरी सिवर पाइप का जिकर है जो कि कि नगर में उतर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम तक थी

# Sage who gave women their due

**Neela Sood**

World is changing and it holds true for my country also. Today, women in our country are rubbing shoulders with men in all walks of life, whether it is science, literature, sports or politics. But it was not the case till 125 years back. The doors of education were closed for women. Sending girls to school was a social taboo and it had the sanction of our religious priests who had interpreted religious scriptures to suit their patriarchal mind set. Child marriage was the norm and a female had no say in the matter of choice of life partner. Her life partner could be another child or an old man at the fag end. Even before a girl would step in to youth, she could be a widow and what was most pitiable that she could never think of remarriage. That woman was like a slave with no right, no dignity and no freedom, would be the right statement.

Nineteenth century is known for renaissance in India. It gifted India a few such men of wisdom who did not see religion as a ladder only for self realization but a beacon of light to improve the lives of people. Maharishi Dayanand Saraswati, the founder of Arya samaj was one of them. With his interpretation of Vedas, he declared that women had right to education, right to read religious scriptures and even act as priests. He strongly spoke against child marriage and advocated for girl's consent and say in the matter of matrimonial alliance and went a step ahead to spearhead widow marriage. For him temples were schools. More than one thousand DAV institutions, Gurukulas, Arya schools in all parts of the country, started by his disciples, changed the face of Indian society.

Such a reformer sage had to pay the price for his crusade. Vested interests in the Hindu society got him poisoned and his end came on Diwali. But, great men stick to their noble virtues even in the most testing time. He not only forgave the cook, part of conspiracy, but helped him escape by giving to him his small savings, as the cook had confessed before him.

This is my tribute to the reformer Sage on Diwali which we celebrate because a few Like Swami Dayanand Saraswati gave us a voice and a reason to feel proud of being a woman in India.

# REMEMBRANCE

Oh Mother, I still feel protected by your love and affection. Your lofty ideals give me strength when I am shattered, keep me humble in success and save me from becoming inhuman amidst provocations.

**Deeply remembered by Bhartendu Sood and family. # 231, Sector-45-A, Chandigarh-160047. 0172-2662870,9217970381**

**Late**
**Smt. Sharda Devi Sood**
**1930-90**

**Publisher & Printer** Bhartendu Sood **Printed at** Amit Arts 36 MW Industrial Area, Ph-I, Chandigarh 9216504644
**Owner** Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
**Phone :** 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

# विवेक, वैराग्य और अभ्यास द्वारा पाप वासनाओं पर नियंत्रण

महेश पोरवाल

महषि पतंजलि कहते हैं—अभ्यास और वैराग्य द्वारा मन की पांचो वृतियों को रोका जा सकता है। वैराग्य की जननी विवेक है। इसलिये यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि विवेक, अभ्यास और वैराग्य द्वारा मन पर काबू पाया जा सकता है। मन हमारा किस प्रकार चलता है? इस बारे में महर्षि वेद व्यास कहते हैं——मन ऐसी नदी है जो निरंतर बह रही है। मनुष्य अपनी बुद्वि का सदुपयोग करके मन को कल्याण की और ले जा सकता है। इसी तरह इस का दुरपयोग पाप की और ले जा सकता है। यानी श्रेय मार्ग और प्रेय मार्ग दोनो पर चलाया जा सकता है। परन्तु विवेक से ओतप्रोत बुद्वि सदैव श्रेय मार्ग की और ही प्रेरित होती है क्योंकि विवेक काम, कोध, लोभ, मोह, अंहकार, ईष्या– द्वेष हिंसा, झूठ से व्यक्ति को बचा कर रखता है। जब की प्रेय मार्ग में बुद्वि विवेक से विहीन होती है व अज्ञानता से ओतप्रोत होने के कारण संसार रूपी भवसागर का आन्नद उठाने के लिये झूठ, काम, कोध, लोभ, मोह, अंहकार, ईष्या– द्वेष व हिंसा आदि का सहारा लेने से नहीं हिचकचाती।

एक बात स्पष्ट है कि विवेक का जीवन को दिशा देने में बहुत महत्व है। यह जानना आवश्यक है कि विवेक है क्या। विवेक का सीधा अर्थ है ठीक व यथार्थ ज्ञान। न्याय दर्शन के भाष्यकार महर्षि वात्स्यायन विवेक की परिभाषा करते हुए कहते हैं जैसे को तैसा बताने वाला ज्ञान विवेक कहलाता है। वास्तव में विवेक वही काम करता है जो कि हंस पक्षी करता है। हंस पक्षी के सामने जल मिला दूध रख दिया जाए जो वह दूध तो पी लेता है पर जल को छोड़ देता है। यानी दूध का दूध व पानी का पानी कर देता है।

विवेकी मनुष्य कभी भ्रांन्ति में नहीं रहता, कभी डांवाडोल नहीं होता। उसकी स्थिती गुफा के भीतर रखे उस दीपक के सामान होती है जिसकी ज्वाला स्थिर रहती है वाहर चाहे कितने भी आन्धी तूफान चले।

विवेकी मनुष्य वही कार्य करता है जिस से अधिक से अधिक मनुष्यों का कल्याण हो। वह अपने स्वार्थ से उपर उठा हुआ होता है।

विवेकी मनुष्य यह भली भान्ति जान चुका होता है कि यह शरीर नश्वर है व आत्मा अजर अमर है, इस लिये विवेकी मनुष्य मृत्यु से नहीं घवराता व सत्य के मार्ग पर ही चलता है उसे दुखों का भय नहीं सताता।

विवेकी मनुष्य ईश्वर के ठीक स्वरूप को जान चुका होता है और एक अजन्मा,निराकार व सर्वशक्तिमान ईश्वर की उपासना ही करता है।

## वैराग्य

संसारिक कर्तव्यों से मुख मोड़, घर बार छोड़, जंगलों में चले जाना या फिर कोई आश्रम बना लेना वैराग्य नहीं है। महषि पतंजलि कहते है अपनी आंखों द्वारा जो देखा है, कानो से जो सुना है, नासिका से जो सूंघा है आदि – आदि उनमें सदा अमिरूचि, तृष्णा न करना, इतना ही नहीं जिन जिन रूपों को नहीं देखा, रसों को नहीं चखा, शव्दों को नहीं सुना आदि आदि उनमें भी तुष्णा अमिरूचि न रखना वैराग्य कहलाता है। मदारी जैसे बन्दर को बांधे रखता है वैसे ही मन को बांधे रखना वैराग्य कहलाता है

मन में प्रत्याहार की अवस्था बन जाती है। यह संसार परिवर्तनशील है, इसके सब सम्वन्ध भी परिवर्तनशील है, न जाने हम कितनी बार किसी के पुत्र बने पिता बने। न इस जन्म से पूर्व इस रूप में थे न इस जन्म के बाद इस रूप में होंगे। यह सब सम्बन्ध अस्थाई है। इसी तरह इस संसार का सब दुख सुख भी क्षण भंगुर है। सच्चा स्थाई सुख तो प्रभु से सम्बन्ध जोड़ने से हैं।

## अभ्यास

मन को एक ही स्थिति में बनाए रखने के लिये जो प्रयत्न किया जाता है उसे अभ्याास कहा गया है। परन्तु यह अभ्यास तभी सम्भव है जब किसी ने पांच यम—— सत्य,

अहिंसा, चोरी न करना, ब्रहम्चर्य, उतना ही पास रखना जितना चाहिये अर्थात जरूरत से अधिक संग्रह न करना व पांच नियम–– शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर को सर्मपण को अच्छी तरह समझ कर जीवन में धारण कर लिया हो। उदाहरण के लिये अहिंसा को समझे बिना उसे धारण नहीं किया जा सकता। अहिंसा को समझने के लिये पहले यह जाने हिंसा क्या है। यदि हमारे किसी लौकिक कार्य के कारण किसी दूसरे को कष्ट हो रहा है तो वह हिंसा मानी जाएगी। चाहे वह मन,कर्म या वाणी किसी से भी हो।

बनवास के दौरान जब रावण सीता का हरण कर के ले गया और श्री राम लक्ष्मण के साथ खोज में भटक रहे थे तो वहो के व्यक्तियों ने कुछ आभूषण जो कि उन्हे मिले थे श्री राम को दिखाये। श्री राम ने लक्ष्मण को दिखाते हुये कहा———" लक्ष्मण देखो क्या यह आभूषण तुम्हारी भाभी के ही है।" लक्ष्मण श्री राम को कहते हैं———" मैने तो भाभी के चेहरे को कभी देखा ही नहीं इसलिये गले के आभूषण नहीं पहचान पांउगा। क्योंकि मैं प्रात प्रतिदिन उनके चरण स्पर्श किया करता था इसलिये पैरों के आभूषण ही पहचान पांउगा।

ऋषिवर दयानन्द एकान्त में अपनी कुटिया में ध्यान में लीन थे। उनको पतित करने के लिये उनके विरोधियों ने एक षडयन्त्र रचा और एक वैश्या को उनकी तपस्या भंग करने के लिये भेज दिया। जब स्वामी जी की आंख खुली तो उन्होने उस वैश्या को सामने पाया। दिल की गहराईयों से शब्द निकलता है " मां"। हे मां आपने यहां आने का कष्ट क्यों किया? मां शब्द ने उस वैश्या पर जादू सा असर किया और वह ऋषिवर दयानन्द के पैरों में पड़ कर फूट –फूट कर रोने लगी व क्षमा याचना करने लग्गीं।

विवेक, वैराग्य और अभ्यास द्वारा पाप वासनाओं पर नियंत्रण करने वालों का जीवन ऐसा होता है

# जमाना

घोड़े की चाल से दौड़ता हुआ बदल रहा है जमाना।
गुम हो गया है कहीं अपनापन, इतना बदल रहा है जमाना।।
देकर धोखा अपनों को, दूसरो का विश्वास खो रहे हैं हम।
दुख में न पाकर कोई अपना, फिर क्यों रो रहे हैं हम।।

सुरेन्द्र मोहन सूद कवि, उपन्यासकार व समाजिक कार्यकर्ता हैं 0172–2581989


# विज्ञापन

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर वधु की तलाश,प्रियजन को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

# Chasing God

**Urvashi Goel**

The death toll of more than 100 devotees in the stampede in Ratnagrah temple, in MP, makes me visualize God screaming and saying, "Don't chase me, I'm with in you. I reside in your heart. If you don't look with in and instead chase me as the deer runs in mirage only to be disillusioned, it is not my fault" God has a justified reason to scream because His very 'darshna' becomes the reason of deaths every now and then, in our country. Surely, our heart will also bleed if somebody coming to meet us has an unnatural death.

Even if your belief says that he is present in some special place, why to chase, he can be reached leisurely.. When it is known that He is eternal and permanent, who was there before the creation of this Universe and will remain even after destruction, then why should one rush to meet Him. The time, money and other resources we spend to reach him on a particular day and time can be used for some other good cause say for serving a needy in hospital. It is real pity that our self-serving religious gurus do not tell our innocent people that God loves those who love his fellow beings.

Why do we forget that all our enlightened sages and great souls found him by looking with in themselves? The great Adi Shankracharya, after visiting Varanasi ( Kashi) had atoned by saying, " Oh, Omnipresent God, pardon my sin of looking for you at a special place." Mother Teresa has very beautifully said, "God is the friend of silence. See how nature, trees flowers and grass grow in silence." Our Vedas say- "Simple acts of pollination, flowering of buds, metamorphosis of larva into a splendid butter fly manifest his presence."

Bhagavad Gita says, the person who dwells within and is contented within is indeed a yogi. The seeker who has turned inward finds greatest bliss in solitude. In such a state, he can uninterruptedly enjoy the bliss within.

When a hooch tragedy is there, govt. tries to reach at the core of the problem but when such tragedies occur at the religious places, it is always attributed to the inadequate arrangement on the part of the government and it is loathe to act against such self appointed religious gurus who are in the business of selling miracle cures.

There is no better service to the innocent people than to dispel their ignorance and give a right direction. Through this column I want to stress God is eternal and permanent so there is no need to chase Him instead we should reach the deprived in our society.


## पत्रिका के लिये शुल्क

**सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें**

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या Cash निम्न अकाउंट में जमा करवा सकते है। **Bhartendu sood SBOP 65005856735** Vedic Thoughts - Central Bank of India A/C No. 3112975979 Bhartendu Sood IDBI Bank - 0272104000055550 Bhartendu Sood , ICICI Bank 659201411714
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।


**पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।**

# आप के द्वारा दिया ज्ञान किसी का भी जीवन बदल सकता है

कुसुम

कहते है कि ज्ञान से उतम कोई भी तोहफा नहीं है, खास कर जब यह ज्ञान उस को दिया जाये जिसे ज्ञान की आवश्यकता हैं।

मैं दिल्ली के अन्तरराष्ट्रीय हवाई .अडडे पर सिडनी के लिये अपनी फलाइट का इन्तजार कर रही थी तभी एक नव युवती जिसकी आयु 20 के करीब थी
दो नवयुवकों के साथ वहां आई व मेरे साथ लगी कुर्सी पर बैठ गई। वे दोनों नवयुवक उस से विदा लेकर चले गये। नव युवती बहुत उदास थी, ऐसा लग रहा था कि अभी रो पड़ेगी। मैं अपने को रोक न सकी और पास से ही दो कोफी के कप ले आई, और उसे एक कप पकड़ा कर बात शुरू की। पहले तो वह अधिक न बोली पर फिर उसने बात करनी प्रारम्भ की तो उसने जो बताया उसने मुझे हिला दिया। वह भी सिडनी ही जा रही थी और उसकी टिकट भी मेरी वाली उड़ान में ही थी। एक सप्ताह पहले ही उसके पति की मृत्यु दिल की गति रूकने से हो गई थी। वह उसका शव लेने जा रही थी।

यात्रा के दौरान मैने उसे काफी हौंसला देने की कोशिश की। तभी मुझे ख्याल आया कि मेरे पास एक पुस्तक——'Tough times never last but tough people do by Robert Schuller' "मुश्किल समय नहीं रहते पर साहसी वयक्ति सदैव रहते हैं" मेरे सामान में रखी हुई है। मैने सिडनी पहुंचने पर वह पुस्तक उसे भेंट कर विदा ली।

इस बात को पांच वर्ष हो गये थे कि एक दिन मेरे घर की घटीं बजी । दरवाजा खोला तो देखा एक सुन्दर लड़की फूलों का गुलदस्ता लेकर खड़ी है। कुछ पल बाद महसूस किया कि उसे कहीं देखा है। मेरी खुशी की सीमा नहीं रही जब उसने बताया कि वह वही है जिसे मैं हवाई उड़ान के दौरान मिली थी और वह मुझे अपनी शादी का निमन्त्रण देने आई थी । खुशी उसके चेहरे पर झलक रही थी। उसने बताया कि यह सब मेरे द्वारा दी गई पुस्तक के कारण सम्भव हुआ है। उसने उस पुस्तक को कई बार पड़ा व उसने उसके सोचने के ढ़ंग को ही बदल दिया। मैं बहुत प्रसन्न थी।

सचमुच आपके द्वारा दिया ज्ञान किसी के भी जीवन को बदल सकता है। आप जब भी जीवन में निराश है, किसी महान व्यक्ति द्वारा लिखी पुस्तक को पढ़ना शुरू का दें। न केवल आपको दुख सहने की शक्ति मिलेगी पर हो सकता है एक सही दिशा भी मिल जाये। पर अक्सर हम दुख के बारे में ही सोचते रहते हैं, कई बार भाग्य को कोसते हैं, कई बार दुसरे व्यक्तियों को। नतीजा ईश्वर द्वारा दिये इस अमूल्य जीवन को बरबाद कर लेते हैं।

---

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी ह
कृप्या निम्न address पर सर्म्पक करें
भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-A, चण्डीगड़.160047
0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

# The incorrigible brat

## Neela Sood

He was driving at almost 100KMPH with scant regard to traffic rules. The rookie cop flagged him down and asked him to lower his window. " Sir, you seem to be in a tearing hurry?" Well, said the flustered driver, "I am a busy professional and am getting late for an appointment." The cop pulled out his voucher pad and began filling it out with the penalty amount after examining his driving license. This was taking too long. How dare he? "Do you know who I am?" he burst out, glaring at the cop. Pat came the reply, "No Sir, I don't need to know everybody"

He continued, "I am the son of Mr Sahay, who was the Commissioner at one time" "Sir, it is just not possible for us to remember every body and their families in such a big city. I'll like to be excused" queried the cop politely, with nary a trace of respect or recognition. The driver couldn't believe it! How dare he not know who my father was! The boy paid a hefty fine and both the traffic cop and driver went their separate ways. But the episode had punched a huge hole into man's ego.

On reaching home he angrily pushed the door of his father's bed room who at that time was having a nap but now was awake, disturbed by the noise. With patience being the last thing such super brats have, he said in a stentorian tone, " Gosh! Our City Police has become really heady. A stupid rookie cop challaned my vehicle for over-speeding and slapped a fine of Rs 5000 though I told him that I happen to be Mr Sahay's son who was a Commissioner at one time."

Mr Sahay pensively listened to him, then rubbing his puffed up eyes, he paused and said politely," If you over-speed, traffic police is right in challaning you. You should have accepted the challan without any fuss and arguments. There was no need to drop my name and don't do it in future. Now I want to live in peace." Oh Dad you are really crazy. I took your name because I happen to be your son. After all, despite remaining in glamorous positions, what have you done for me? And now you object even if I mention that I am your son. Real shame! " He replied angrily and went away after slamming the door

After a few days he was again detained on the lights by the traffic Police, "Sir, it looks this vehicle belongs to some other member in your family." The traffic Cop said after checking his documents. No, it is mine but is registered in the name of my father, being the family head." He said very arrogantly. Sir, it hardly matters; I just wanted to be sure about its ownership." His ego was again hurt. Furious and red he went to his father who was taking his lunch

"Dad, you hardly use this car. It is a real embarrassment for me when cops check the papers and question me about the ownership I have asked an agent for its transfer in my name. You sign at the columns ticked here."

After an hour or so he went to collect the documents, "Dad what is this you haven't signed. You seem to be not realizing how precious my time is. " angrily he said to Mr. Sahay in a frosted voice, as if he was his boss.

"Having already lost the son I don't want to lose the ownership of the car. Stop using my car and help yourself. I've kept the papers with me" retorted Mr. Sahay who perhaps for the first time in his life was tough with his son.

True, whether an incorrigible brat or Rama of epic Ramayana, we as parents shape our children.

**Insects like ants possess greater altruistic attributes than we human beings. They believe in group work as opposed to our ever increasing individualistic growth, attitude that has stolen our ever increasing peace of mind, happiness and progress.**

**But just as little drops of water together make the mighty ocean, so too, little acts of kindness and compassion can and will make a difference.**

# संत ?

अशोक कुमार

असली संत मस्तिष्क को बुध करे, सोच को स्वर्ग करे।
आचरण को स्वर्ण करे, क्रोध को रद्द करे।
अभद्रता पर व्यंग्य करे, दुश्मनों को दंग करे।
युवकों को विवेकानंद करे ।
सत्य का मंथन करे , मारूस्थल को मेघ करे।
मठ का बहिष्कार करे, पनघट का अविष्कार करे।
क्षमा का निर्माण करे, कल्याण का किला रचे।
दैवालय बनाये दिव्यता के, दूषित न करे देव भूमि को, न स्वांग रचाये द्रोपदी का,
फसले न बीजे बुराईयों की, संरक्षण करे वैदिकता का।
करतब न दिखाये कामुक्ता के, द्रव्य-कामुकता अग्नि है, प्रहार करे परमाणु सा,
संत तो रक्षक बने भक्षक नहीं ।

संत - आज मनुष्य निराशावादी हो गया है, तनाव का जीवन जी रहा है। मुश्किलों से घिरा पड़ा है। मनुष्य संतुष्टि की खोज में व्याकुल है, धैर्य वष्पिकरण हो गया है। कोई सहारा न किनारा मिल रहा है, पदार्थवाद, स्वार्थ बढ़ गया है, यर्थाथवाद समाप्त हो रहा है। ऐसे में मनुष्य संतो-महंतों, महात्माओं की शरण में जाता है जिससे काम, क्रोध, मोह, अहंकार से छुटकारा मिले, तनाव, चिन्ता, भयमुक्त हो, एक संतुलित संतुष्ट वातावरण मिले। संत को संतुष्टि, त्याग, भक्ति ज्ञान की मूर्ति माना जाता है, ये तत्व संत माला के माणिक होते हैं। कुछ का मानना है कि संत मार्ग अपनाने वाला या तो संसारिक विकारों, क्रियाओं से तंग आ जाता है या संसारिक व्यवस्था से मन भर जाता है या संतुष्टि बिन्दु से उपर उठ जाता है। या जीने का ढ़ग बनाते है। विश्वविख्यात संत, निर्धनता, दुर्गमता से निकले हैं, संत शांति दूत होता है। हिंसा खण्डनीय होता है, सत्य संगति का अंग होता है। सरल भाषा में संत एक सुशील, सत्यवादी,सजग, ज्ञान, दीपक, निर्बलता, असफलताओं के बिना परवाह किये उनकी पराज्य करता है। मर्यादाओं का सम्मान, कु-प्रथाओं, कुरीतियों का विरोध, अमानवता का शत्रु, धर्म अध्यात में उन्नत, प्रभु उपदेशक - प्रभु आस्था और मानवता का पूजारी होता है। विषय-विकार वासनाओं से कोसों दूर होता है, संत अर्पण-समर्पण की दिक्षा देता है। संत समाज में एक सेतु होता है, पिशाच वृतियों को भस्म करता है, धैर्य, धीरज, निश्चिंतता, ज्ञान-विज्ञान, आस्तिकता का अनुसरण करता है। कुमार्ग से सुचेत करता है। सुमार्ग का मार्ग दर्शक होता है। सतं क्षमा विश्वासनिय होता है।

वह सदा कहता है कि जो हो रहा है वह प्रभु कृपा हेतु है, वही सत्य है, पश्चाताप भूल है, प्रतीक्षा, अंतकरण शुद्धता एक संतगुण है। तर्पता, शीर्घता, रफतार को घातक कहता है। धर्म कट्टरता का विरोधी होता है। संत भगवान को बांटता नहीं और स्वयं भी भगवान बनने का दावा नहीं करता, अगर कहे मुक्ती दाता तो वह उसकी मूर्खता है। अपने श्रद्धालुओं की भावनाओं से खिलवाड़ नहीं करता, ईमानदारी, परोपकारी का पाठ पढ़ाता है, सच्चा संत सुख-समृद्धि के लिए धन एकत्रित नहीं करता। अध्यात पथ उसका आन्नद होता है, वासनाओं का दास नहीं, ज्ञान-सतसंग उसकी खोज होती है। संत की न कोई जाति होती है और न ही वह वर्ण-वर्ग में विश्वास रखता है। सम्पति उपासक नहीं होता है, श्रैष्ठ सोच, उच्च विचार, धर्म प्रवचन, मानव जाति का सम्मान, उच्च आचरण, सहज स्वभाव, अहिंसारोपण, स्वास्थ्य निर्माण और ईश्वर अर्थ समझाना उसका धर्म बन जाता है। अगर क्रोध, मोह, लोभ का पारा ऊपर चढे तो संत भटकन में है।

संत विचार करता है, हनन नहीं करता। संत का कर्तव्य कि वह धार्मिक स्थलों को दूषित न करें, दिव्यता सुरक्षा करें, मानवीय मूल्यों का आदर करे। भारतीय परिवारों की महतता समझाऐ। जीयो और जीनें दो का संदेश दें ओर बल प्रयोग कभी न करे, सभी से प्रेम करें। संत सांस्कृतिक परम्पराओं का आदर सिखाता है, राष्ट्रवाद, भाईचारा, समाज कल्याण, असहायों की सहायता, नारीत्व समाज का आदर और समर्थक होता है। इस प्रकार वास्तिवक संत, शिक्षक, प्रचारक, निर्माणकारी होता है, संत की तुलना एक वृक्ष से की जा सकती है जो सदा फल, फूल, छाया, शुद्धता, रक्षा और सम्पदा देता है। जिस प्रकार वृक्ष सदा कुछ न कुछ देता है कभी विलाप नहीं करता उसी प्रकार पाक संत एक सेवा, त्याग का प्रतीक होता है, । ईश्वरीय गुण सिर्फ गाता ही नहीं धारण भी करता है। यह सत्य है कि कुछ संत सन्यास में रहते हैं और कुछ आवास में। अगर आवास में रहकर वह ज्ञान वितरण करता है तो समाज का आदर पाता है। पदार्थ-स्वार्थ अपेक्षा करे तो वह कुमार्ग कहलाता है। जिससे पाप पात्र भर जाता है, पाप सदा रिसता है जो कि नासूर बन जाता है। अंत में संत कलंक बन जाता है। कबीर जी ने विस्तृत रूप में कहा है कि निर्गुण कपटी संत हजारों पापियों से बुरा है।

असल संत न वस्त्र मांगे न अस्त्र मांग, न शस्त्र मांगे, न अमोद-प्रमोद न धन मांगे, केवल कुटिया हवादार बनाये, आश्रमों में न चाहत रखे, गुरूकुल तो समाज सराहे पर काल गुरूओं से सदा कतराऐ। पाखण्डी, कर्म काण्डी संत समाज पर बोझा होता है। अगर संत स्वाद के लिए बना है तो वह एक रोग है, संत शिक्षा-दिक्षा तो दे पर भिक्षा उतनी ही ले जितनी कि उसके इस पांच ततवों से बने शरीर को चलाये रखने के लिये चाहिये। सत्य संत

साहित्य सिखाऐ। सांस्कृति सदा बचाऐ, न साम्प्रदायिकता फैलाये, न स्वयम्बर रचाये, न शोषित करे, न धरा हड़पे, संत तो सदा प्रतीष्टा कमाऐ, प्रचण्डता, प्रताड़िता से न पाला डाले तभी तो संत कहलाऐ। वाणी संत की मंदाकणी होती है, वचन बनते है प्रेम के दीपक। वह रंग-रक्त बंधनों से रहे सदा मुक्त, मुख-मंडल पर दिखे सन्देश सत्यता का। संत सधाना, भक्ति और ध्यान की विधि सिखाता है, समाज को जीवन के गणित से परिचित करवाता है, इस प्रकार संत समाजवादी, उद्धारवादी, सुद्धारवादी होता। इतिहास साक्षी है कि संत लहर से समाज में परिवर्तन आए, व्यवस्था बदली। संत समाज के सुमन होते हैं और सुमन समान संत में गुणवता होनी चाहिए। संत को निवेषक, व्यापारी, शासन से सम्बध गठित करना शोभा नहीं देता। कामुकता उतेजना वृद्धि वाले भोजन को तलांजली दे। गोपनीयता क्रियाऐं न सिखाए, पालन लक्ष्मण रेखाओं का करे, मठ मंत्र न दे, जीवन वैराग्य, विरह न बनाए। मादक औषधि, कामुकता दास वृति हेतु न दे।

संत से ज्ञान वृद्धि की अपेक्षा की जाती है। संत कर्म, भक्ति, सत्य-योग शिवर लगाते हैं। कबीर जी ने कहा है कि सच्चा संत नाम-धन एकत्रित करता है जो परलोक में काम आता है। अगर माया इकत्रित करे, किसी ने सत्य कहा है माया छुरी है भक्ति को घायल करती है। कबीर जी ने कहा है कि माया नागिन है इसको तो वही हाथ लगाये जो इसका मंत्र जाने। माया, सम्पदा साम्राज्य स्थापित करने के लिए लालची संत चक्रव्यु की रचना करता है, मकड़ी जाल बुनता है क्योंकि दुष्ट आत्मा की जकड़ में आ जाता है। ऐकान्त वास चाहिए तो संत जंगलों में जाये, क्या कुटिया, भक्ति, शांति के लिए या अनैतिकता हेतु चाहिए। अगर बहरूपिया संत द्वारा किराये पर एकत्रित की हुई भीड़ एक छल के जाल में फसी मछलियों समान होती है। उन की सोच-सूरत, मत का ध्रवीकरण हुआ होता है। ऐसा संत समाज में एक शातर पात्र होता है। प्रथम जिसकी खातिर होती है, बाद में समाज खातिर करता है। जब संत अपने बारे में सोचे तो संत मार्ग से हट जाये, कुदृष्टि डाले, कपट के आँसु बहाए तो संत शैतान बन जाता है, अगर समाज का सोचे तो भगवान कहलाता है। संत चिकित्सक तो बने पर वह औषिधि न दे जिससे सुरत सुन हो। संत का जीवन और दर्शन मानवता को सचाई, निःस्वार्थ सेवा, हलीमी और दया के राह पर चलना सिखाता है, संत की सत्ता ज्ञान होती है, यही उसकी सम्पदा होती है। संतो का सत्ता में प्रवेष निषेध होना चाहिए। अगर लोगो को बोले श्रवण करो, स्वयं विमान वाहनों में भ्रमण करे, श्रद्धालुओं का मंझधार करे तो वह संत नहीं डराकुला होता है। संत चयन करना कठिन कार्य है पर संत को भी चावल परख समान प्रखा जा सकता है। अगर सच्चा संत साध न मिले तो घर के वृद्धों को ही संत का दर्जा दें। उनका अनुभव कुंदन, श्रद्धा उनकी गंगा, आशीर्वाद, वरदान और प्रेरणा, साहस बंधाती है। अरे समाज वालों अगर संत ढूंढे न मिले तो धार्मिक काव्यों को ही संत मान लो।

चाणाक्य ने कहा है कि पूर्ण संत के दर्शन तीर्थ सम्मान होते हैं, तीर्थ का पुण्य तो फलने के पश्चात मिलता है। साधु का अर्थ जटा-जूट धारण किया, भभूत लगाए व्यक्ति से नहीं, साधु सील गुण, ज्ञान, आचार, दया आदि गुणों से युक्त होता है। अतः संत का मुख्य कर्त्वव्य है शौधकरण, ज्ञान प्रसार और समाज सुधार। अगर विश्लेषण करें तो प्रतीत होता है कि आज भारत में संत समाज एक अच्छा खासा वर्ग - श्रैणी बन गया है जिनके पास आपार सम्पदा है । संत और सम्पदा का मेल हुआ नहीं तो विनाश की लंका बनी नहीं। आज सरकारी तंत्र को चाहिए एक ऐसा कानून जिससे संतों का पंजीकरण हो सम्पदा का हिसाब हो। उद्योगों में संतों के आगमन पर रोक लगे। जिससे संत और धनमाया का मेल न हो और संत की छवि धूमल न हो।

उप-आबकारी और कर कमीशनर, सेवा निवृतद्ध, पंजाब ।मो. 98789-22336 दिनांक 19.10.2013

# अध्यातमवाद और मायावाद में अन्तर

**प्रत्येक वस्तु को आत्मा के दृष्टिकोण से देखना अध्यातमवाद है। किसी भी कार्य को करते समय यह देखना कि इसको करने से आत्मा का उत्थान है या पतन। और यदि जवाब मिलता है कि इसमें आत्मा का पतन है तो उसे किसी भी हालत में नहीं करना, चाहे उस में करोड़ो रूपयों का लाभ ही क्यों न हो। इसी तरह अगर जवाब मिलता है कि इस में आत्मा का उत्थान है तो उसे अवश्य करना। यह है अध्यातमवाद।**

**हर एक चीज को भौतिक लाभ और शारीरिक सुख की दृष्टि से देखना मायावाद है। मायावादी भौतिक लाभ और शारीरिक सुख के लिये किसी भी हद तक अपने को गिरा देता है। उसने आत्मा का हनन कर दिया होता है।**

# Passbook – Really good one!

**Pankaj Dogra**

Priya married Hitesh this day. At the end of the wedding party, Priya's mother gave her a newly opened bank saving passbook with Rs.1000 deposit amount.

Mother: Priya, take this passbook. Keep it as a record of your marriage life.When there's something happy and memorable happened in your new life, put some money in.Write down what it's about next to the line. The more memorable the event is, the more money you can put in.I've done the first one for you today.
Do the others with Hitesh.When you look back after years, you can know how much happiness you've had.

Priya shared this with Hitesh on getting home.They both thought it was a great idea and were anxious to know when the second deposit could be made.

This was what they did after a certain time:
- 7 Feb: Rs.100, first birthday celebration for Hitesh after marriage
- 1 Mar: Rs.300, salary raise for Priya
- 20 Mar: Rs.200, vacation trip to Bali
- 15 Apr: Rs.2000, Priya got pregnant
- 1 Jun: Rs.1000, Hitesh got promoted and so on…

However, after years, they started fighting and arguing for trivial things.They didn't talk much.They regretted that they had married the most nasty people in the world…. no more love…

One day Priya talked to her Mother:'Mom, we can't stand it anymore. We agree to divorce.I can't imagine how I decided to marry this guy!!!'
Mother: 'Sure, girl, that's no big deal.Just do whatever you want if you really can't stand it.But before that, do one thing first.Remember the saving passbook I gave you on your wedding day?Take out all money and spend it first.You shouldn't keep any record of such a poor marriage.

'Priya thought it was true.So she went to the bank, waiting in the queue and planning to cancel the account.While she was waiting, she took a look at the passbook record.She looked, and looked, and looked. Then the memory of all the previous joy and happiness just came up her mind.Her eyes were then filled with tears. She left and went home.
When she was home, she handed the passbook to Hitesh, asked him to spend the money before getting divorce.

The next day, Hitesh gave the passbook back to Priya.She found a new deposit of Rs.5000. And a line next to the record:'This is the day I notice how much I've loved you thru out all these years How much happiness you've brought me.'

They hugged and cried, putting the passbook back in the safe.

**09814959215Pankaj Dogra is with Punjab Police. He is a thinker and writer.**

# अपरिग्रह क्या है

अपरिग्रह ऋषि पतंजलि द्वारा, मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने के लिये, बताये गये पांच यम में से एक यम है। इसलिये यह आवश्यक कि हम अपरिग्रह के अर्थ को ठीक से समझे।

मनुष्य धन कमाये, उन्नति के रास्ते पर जाये व ऐश्वर्य की प्राप्ती करे। यह सब ठीक है जब तक की उसके साधन ठीक हैं और जब साधन ठीक नही तब यह चोरी है। जब मनुष्य ऐसा करता है तो एक और यम 'अस्तेय' का उलंघन है। धन कमाते हुये, ऐश्वर्य की प्राप्ती करते हुये यह सोच पैदा हो जाये कि मैं इस सब सम्पति का अकेला मालिक हूं और यह केवल मेरे उपयोग के लिये है 'अपरिग्रह' का उलंघन है।

धन को कमाना व इकठठा करना गलत नहीं है, गलत है ऐकत्रित किये धन के साथ जुड़ कर अपने आप को उसका स्वामी समझना।
यह स्वामी समझने की भावना, धन तक ही सीमित नहीं है, हम अपने आप को अक्सर हमारे सम्पर्क में रह रहे लोगों का स्वामी भी समझने लग पड़तें हैं। मां अक्सर समझती है कि उसके बेटे पर केवल उसी का अधिकार है। बेटे की जब शादी हो जाती है तो उसका झुकाव प्राकृतिक तौर पर अपनी पत्नी की तरफ होने लगता है पर कई बार यह प्रकिया मां के लिये असहनिय होने लगती है, और इसका दोषी वह अपनी बहू को मानने लगती है कि उसने उसका बेटा उस से छीन लिया। जब की असली दोषी वह स्वयं होती है क्योंकि वह स्वयं को अपने बेटे की मां न समझकर स्वामी समझती है।। इसी तरह स्थिती तब भी खराब होने लगती है जब बहू समझती है कि उसके पति पर केवल उसी का अधिकार है। इस तरह अपने आप को किसी का स्वामी समझना एक हिंसा का रूप ले लेता है और यह अपरिग्रह के सिधान्त के विरूद्ध है।

यह अपने को दूसरे का स्वामी समझने की आदत हमें उस व्यक्ति का दास बना कर रख देती है, जिसका कि हम अपने को स्वामी समझते हैं । कारण व्यक्ति जब अपने स्वामित्व को जाते हुये देखता है तो दूसरे को अपने अधिकार में रखने के लिये उसकी गलत बातों को भी मानता है। यही कारण है कि मां अपने विवाहित बेटे की गलतीयों को जानते हुये भी उसे दोष न देकर बहु को ही दोष देती है। यह इसलिये होता है क्योंकि मां की स्वामित्व तभी तक है जब तक वह बेटा उसका अपना है। अगर मां अपने को बेटे का स्वामी न समझे केवल मां ही समझे और इस बात से जानकार हो कि अगर वह उसका बेटा है तो किसी का पति भी है तो यह स्थिती नही आयेगी। अपने को दूसरे का स्वामी न समझना ही अपरिग्रह है।

समझने वाली बात यह है कि यह संसार परमात्मा ने हमारे लिये तो बनाया है पर हम इसके मालिक नहीं हैं। हम तो केवल माली हैं। जिसने यह समझ लिया उस ने अपरिग्रह को समझ लिया।

यही बात संसारिक चीजों पर भी लागू होती है। हम एक के बाद दूसरी चीज खरीदते तो इस लिये हैं कि हमारा जीवन अरामदय हो जाये पर कुछ समय बाद वही चीजें हमारे लिये बोझ बन जाती हैं व हमें एक तरह से उनकी सेवा करनी पढ़ती है। इसमें दोष चीजों का नही दोष हमारा है जो कि उन चीजों के दास बन जाते हैं। जरूरत से अधिक ऐकत्रित किया धन, जरूरत से अधिक बड़ा मकान, जरूरत से अधिक जायदाद यह सब बुढ़ापे में कष्ट का कारण बन जाते हैं। यह जरूरत से अधिक ही 'अपरिग्रह' का उलंघन है। इसके विपरीत जो अपने को किसी का स्वामी नही समझता, किसी भी चीज को प्रयोग तक ही सीमित रखता है व उस पर अधिपत्य नहीं चाहता वही अपरिग्रह का पालन करता हे व प्रसन्न,निर्भय व सुरक्षित महसूस करता है

अपरिग्रह के सम्बन्ध में आर्य विद्वान श्री मनमोहन कुमार आर्य के विचार इस प्रकार हैं —— यजुर्वेद के मन्त्र की प्रसिद्ध सूक्ति 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्' आदेश करते हुए कहती है कि मनुष्यों का अधिकार संसार के पदार्थो को केवल त्याग की भावना से भोग करने का है। मनुष्य लालच न करें और संसार का धन किसी का व्यक्तिगत व निजी न होकर परम पिता परमात्मा का है जिसके प्रयोग का अधिकार ईश्वर की बनाई हुए जल, वायु, अग्नि आदि की तरह सभी मनुष्यों को समान रूप से अपनी–अपनी आवश्यकता के अनुसार है। जिस प्रकार वायु, जल व अग्नि आदि का अधिक मात्रा में सेवन हानिकारक होता है इसी प्रकार, ईश्वरीय नियम के अनुसार, अपरिग्रह अर्थात् आवश्यकता से अधिक धन का संग्रह हानिकारक अर्थात् दण्डात्मक होता है क्योंकि

# M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

( An ISO 9001-2008 Certified Company)

**Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values'**

**Train yourself in the ideal of the lily, which blossoms in the mud and has to keep itself engaged in the struggle for existence day in and day out... and yet it does not forget the moon above.**
**It keeps its love for the moon constantly alive. It seems, however, but a most ordinary flower. There is nothing extraordinary about it."**

**SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA**

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Panjabi
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com


## अपरिग्रह क्या है पृष्ठ 13 का शेष

ऐसा करने से दूसरों के प्रयोग के अधिकार में बाधा आती है। आवश्यकता से अधिक धन का संग्रह परमार्थ कार्य न होकर स्वार्थ का कार्य होता है। स्वार्थी मनुष्य को कोई भी अच्छा नहीं मानता अपितु ज्ञानियों की दृष्टि में वह उपेक्षा, आलोचना व निन्दा का पात्र बनता है। परिग्रह से असन्तोष की भावना भी कुछ जुड़ी होती है। हम समझते हैं कि असन्तोष आध्यात्मिक जीवन के मार्ग का शत्रु एवं उसका बाधक है। इससे मनुष्य में नास्तिकता जन्म लेती है। अधिक धन व साधन सम्पन्न व्यक्तियों का अपनी इच्छाओं पर नियन्त्रण नहीं होता जिससे वह लोभ, जो एक प्रकार से पाप का मूल है, उसका ग्राहक या वाहक बन जाता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन को नास्तिकता प्रभावित कर उसे अपना दास बना लेती है। जन्म व मृत्यु के चक से मुक्ति व लम्बी अवधि तक ईश्वर के आनन्द की प्राप्ति की अवस्था सत्य ज्ञान व ईश्वर की कृपा से ही मिलती है। आज सारा संसार ही धन के पीछे दौड़ता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा है। यह एक अन्धी दौड़ है जिसका अन्त दुःखद होता है क्योंकि मृत्यु आने पर अर्जित धन व सम्पदा यहीं छूट जाती है और अगला नया जन्म, सुख व दुःखादि, इस जन्म के कर्मो के आधार पर निर्धारित होते हैं जिसमें अर्जित धन की भूमिका, मात्र इतनी ही होती है कि वह अच्छे व बुरे, किस प्रकार के कार्यो से अर्जित किया गया तथा उसका उपयोग धर्मार्थ कार्यो यथा वेद विद्या के संरक्षण व परिवर्धन, वैदिक मान्यताओं के प्रचार, यज्ञ, सेवा, दान व परोपकार आदि कार्यों में किया गया या नहीं। इससे प्रारब्ध बनता है।


**फोन पर आध्यात्मिक चर्चा करें।**

(केवल पुरूष वर्ग) **09927887788**

आध्यात्मिक मित्र मण्डल मेरठ
कृपाल सिंह वर्मा, 253 शिवलोक,
कंकर खेड़ा, मेरठ
**09927887788**

# अपने को जानो

डा महेश विद्यालंकार

जमाने में उसने बड़ी बात कर ली।
जिसने अपने आप से मुलाकात कर ली।

चाहे व्यक्ति कितना धनवान, बलवान, साधन सम्पन्न व ज्ञानी हो जाये,शास्त्र पढ़ ले, प्रवक्ता बन जाये और किताबें भी लिख ले, यदि उसमे जीने की कला, कर्मो की सुगन्ध, आत्म ज्ञान तथा परमात्मबोध नही है, तो सब कुछ बेकार है। दुनियां में अधिकांश व्यक्ति दिव्य परमात्मा को जाने बिना ही चले जाते हैं। जैसे आये वैसे ही चले गये। जिसे आत्मबोध नहीं उसे परमरत्मबोध कैसे होगा? जिसने खुद को नहीं जाना, वह खुदा को क्या जानेगा? नित्य लोगों को मरते हुये देखते हैं, फिर भी अज्ञानता के कारण अपने मरने तथा अमर आत्मा की नहीं सोचते हैं। जितने हम परमात्मा से दूर होते जायेंगे, उतने भोगों, रोगों व दुखों में फसते जायेंगे।

प्रत्येक इन्सान को प्रात' उठकर तीन बातें जरूर सोचनी व दुहरानी चाहिये।

1 मैं इस दुनिया में किस लिये आया हूं? जिसलिये आया हूं उस दिशा में कुछ कर रहा हूं या नहीं? नहीं कर रहा हूं तो करने की इच्छाशक्ति व संकलप दृड़ करना चाहिये।

2 आया हूं तो एक दिन जरूर जाउंगा। अमर होकर सदा रहने के लिये नहीं आया हूं।

3 जब जगत से जाउंगा, तो क्या साथ ले जाउंगा? साथ ले जाने के लिये धर्मकर्म, दानपुण्य, सत्कर्म आदि नहीं इकठठे किये तो करने की सोच व इच्छा जागृत कर लेनी चाहिये। प्राणी अकेला ही जन्म धारण करता है और अकेला ही देह छोड़ता हे। किसी को पता नहीं जीव कहां से किस योनी से आता है, और किस योनी में जायेगा। अकेला ही अपने किये हुए अच्छे और बुरे कर्मो का फल भोगता है। जन्म, बचपन, शैशव, यौवन, बृद्धावस्था और फिर मृत्यु—यह चक निरन्तर चल रहा है। दुनिया में रिश्ते, नाते, सम्बन्ध, भाई–बन्धु सभी मरने के बाद समाप्त हो जाते है। एक भी रिश्ता नहीं रह जाता है। केवल प्रभु का रिश्ता सदा बना रहता है। वही सच्चा और स्थाई है। उपनिषद कहता है—उठो! जागो। अपने को सम्भालो। जिस उदेश्य के लिये यह मूल्यवान मानवजीवन मिला है,

उस दिया में सोचो, समझो और आगे बढ़ो। निराश हताश नहीं होना है। जीवन की धारा को बदलना है, संसार की बातों से अपने को हटाना और ईश्वर की और लगाना है। तभी जीवन उदेश्यपूर्ण होगा।

केवल मन्त्र तोते की तरह रट लेने से आत्म बोध नहीं हो जाता। वेद कहता है———यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति— जो अपने आप को नहीं जानता वह वह ऋचा से क्या करेगा।

## जीवन प्रेरणा

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहां जो सोवत है,
जो जागत है सो पावत है,
जो सोवत है सो खोवत है।।

टुक नीदं से अखियां खोल जरा,
और अपने प्रभु से ध्यान लगा,
यह प्रीत करने की रीत नहीं,
प्रभु जागत है, तू सोवत है।।

जो कल करना, सो अज कर ले,
जो अज करना, सो अब कर ले,
जब चिड़ियन ने चुग खेत लिया,
फिर पछताये क्या होवत है।।

नादान भुगत करनी अपनी,
ऐ पापी! पाप में चैन कहां?
श्रब पाप की गठरी शीश धरी,
फिर शीश पकड़ क्यों रोवत है।।

**Just as little drops of water together make the mighty ocean, so too, little acts of kindness and compassion can and will make a difference.**

# Fostering good relations

It seems, scores of spectators were standing around to see the short-distance run at a sprawling sports stadium. At the sound of gunshot, eight girls started running.

Among them, a scrawny-looking girl, stumbling upon something, suddenly slipped down and soon started sobbing. Seeing this, the other seven girls instantly stopped in their tracks, and ran towards her side.

One of them tried flicking the dirt off her bruised knee; another tried wiping the tears plopping down her cheeks; and the rest tried comforting her saying these things do happen in sports events. Soon all the girls, clasping hands with one another, started running together along with this little girl, such that none straggled behind. As they reached the winning post, many pairs of eyes that were watching this wondrous phenomenon, welled up with tears.

Yes, these were spastic children and the sports event was organised by National Institute of Mental Health.

The heart-warming act of these divine-natured children was emblematic of several things – strength in unity, happiness in helping, value for relations, most importantly, helping others to be successful by shoving aside one's own success.

These children could do this, because they were special children, with less cerebral caliber. But, we normal humans can never even think of doing such things, as we are the ones with more brainpower!

Ironically, leave alone helping someone to be successful in life, we try razing down the successes of others around, by the juggernaut of our wily and nefarious schemes! Thanks to today's unhealthy competitive spirit, with 'success at any cost' mantra.

The human mind would be ever plotting to pull the possible contenders down, to reach pinnacle of success in all possible arenas.

In such scenario, wherein the ever scheming mind is saturated with surplus negative thoughts, where is the room for positive feelings of care, concern and compassion for fellow human-beings?

Indeed, it's time we sloughed off this fixation with oneself and realized the joy in helping folks around, and fostering good relations with them.

Perhaps when we are riding on huge wave of happiness/success, we mayn't feel the need of people's goodwill or their good wishes. But considering vagaries of life, we do not know whose help/support we may require in future! Really it's easy to antagonize people around and alienate oneself, but it's difficult to weave that strong human web around us, and to be a part of cohesively knit groups.

To this, we need to invest immense efforts to forge strong social bonds with humans around. Philosophically speaking, too, it's believed God treats us the way we treat others. When we try spreading happiness by helping others around, it seems we get helped too by the Lord, in times of need. And when we try extinguishing someone's happiness/success, ours own gets extinguished too in course of time!

# आत्मविश्वास ही है वास्तविक विश्वास अथवा आस्तिकता

सीता राम गुप्ता

विवेकानंद ने कहा है कि नास्तिक वो नहीं जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करता अपितु नास्तिक वो है जो स्वयं पर विश्वास नहीं करता। यदि आप स्वयं पर विश्वास नहीं करते तो ईश्वर पर विश्वास करना निरर्थक है। यदि आपमें आत्मविश्वास है तो आप वास्तव में आस्तिक हैं बेशक आप पूजा–अर्चना जैसे बाह्य तत्त्वों से विमुख रहते हों।

आस्था अथवा विश्वास का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। आस्था के बिना हम एक क़दम भी ज़मीन पर नहीं रख सकते। हमें पूरा विश्वास होता है कि हम खड़े रह सकेंगे और चल सकेंगे तभी एक के बाद दूसरा क़दम ज़मीन पर पड़ता है। विश्वास के सहारे ही तेज़ दौड़ पाते हैं और बड़े–बड़े कार्यों के करने में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। अब प्रश्न उठता है कि ये विश्वास क्या है और किस के प्रति विश्वास है जो हमें असंभव से असंभव कार्य करने में सफलता प्रदान करता है तथा विषम से विषम परिस्थितियों में भी हम हार नहीं मानते। प्रायः लोग कहते हैं कि ईश्वर के प्रति विश्वास ही हमें अपार क्षमताओं से परिपूर्ण कर देता है जिससे मुश्किल से मुश्किल काम करना भी चुटकी बजाते संभव हो पाता है। इसी विश्वास के कारण हम पूजा–पाठ अथवा प्रार्थना करते हैं और सफलता की कामना भी और निश्चित रूप से हमें सफलता मिलती है। कहने का तात्पर्य ये है कि यदि हममें ईश्वर के प्रति विश्वास है, हम आस्तिक हैं, तो हम जीवन में सफल और सुखी हो सकेंगे, इसमें संदेह नहीं।

अब विचार कीजिए कि यदि हम ईश्वर पर तो विश्वास करते हैं लेकिन स्वयं अपने पर नहीं तो क्या ऐसी अवस्था में भी जीवन में सफलता प्राप्त कर सकेंगे? यदि हम कहें कि मैं तो इस कार्य को हर्गिज़ नहीं कर सकता ईश्वर ही कर सकता है तो क्या ऐसी अवस्था में भी कार्य सम्पन्न हो जाएगा? शायद नहीं। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है विश्वास लेकिन अनिवार्यतः स्वयं पर। अपनी क्षमताओं पर। विश्वास व्यक्ति की अपनी मनोदशा है चाहे वह स्वयं पर करे अथवा अन्य पर। दूसरे पर किया गया विश्वास भी करने वाले के मन में ही तो घटित होता है, चाहे वह अन्य व्यक्तियों पर किया गया विश्वास हो अथवा ईश्वर पर किया गया विश्वास। विवेकानंद ने कहा है कि नास्तिक वो नहीं जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करता अपितु नास्तिक वो है जो स्वयं पर विश्वास नहीं करता।

यदि आप स्वयं पर विश्वास नहीं करते तो ईश्वर पर विश्वास करना निरर्थक है। यदि आपमें आत्मविश्वास है तो आप वास्तव में आस्तिक हैं बेशक आप पूजा–अर्चना जैसे बाह्य तत्त्वों से विमुख रहते हों। अब प्रश्न उठता है कि क्या हम आत्मविश्वास के सम्मुख ईश्वर पर विश्वास करना छोड़ दें? नहीं ऐसा भी नहीं है। वस्तुतः आस्तिकता और आत्मविश्वास दोनों एक ही हैं। आस्तिकता आत्मविश्वास उत्पन्न करने का साधन अथवा मार्ग है। ईश्वर में विश्वास अथवा आस्तिकता द्वारा हम स्वयं में आत्मविश्वास उत्पन्न कर अपनी आत्मशक्ति का ही जागरण करते हैं। आस्तिकता में जहाँ तक ईश्वर में विश्वास का प्रश्न है हमारा ईश्वर नितांत हमारी आकांक्षाओं के अनुरूप होता है। उसे हम स्वयं निर्मित करते हैं और इस विश्वास के साथ कि हम जो माँगेंगे वह उसे पूरा करेगा। हमें पूर्ण विश्वास होता है कि हमारी मांगें पूरी होंगी। ये भी आत्मविश्वास का ही एक रूप है अतः आस्तिकता आत्मविश्वास से भिन्न नहीं है।

मनुष्य अनंत संभावनाओं का स्रोत है भूमि के गर्भ में प्रवाहित अनंत जलराशि की तरह। जब तक उस जल तक पहुँच नहीं बन पाती उससे वंचित रह जाते हैं। कुआँ खोदकर या नलकूप लगाकर उस अपार जलराशि से जुड़ा जा सकता है, उसे प्राप्त किया जा सकता है। कुआँ या नलकूप जल नहीं है अपितु जल तक पहुँचने का माध्यम है। अपार जलराशि का दोहन करने के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता पड़ती है और उसे हम ही तलाशते हैं। मनुष्य की क्षमता भी अपरिमित है और उसके विकास के लिए, उसको जानने, खोजने और समुचित उपयोग करने के लिए आत्मविश्वास रूपी माध्यम अत्यंत आवश्यक है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए सफलता प्राप्त करने के लिए तथा खेलों में विजय प्राप्त करने के लिए शारीरिक बल की अपेक्षा अधिक ज़रूरी है आत्मविश्वास। आत्मविश्वास से ही सभी साधन जुट पाते हैं।

आत्मविश्वास हो तो शारीरिक बल की कमी ही

नहीं अपितु विकलांगता भी सफलता में बाधा नहीं बनती इसके अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं। वर्ष 1960 में रोम में आयोजित ओलंपिक खेलों में अपने अपरिमित आत्मविश्वास के कारण ही विल्मा रुडोल्फ नामक विकलांग बालिका ने अपने प्रदर्शन से दुनिया को चमत्कृत कर दिया और दुनिया की सबसे तेज धाविका कहलाई। विल्मा रुडोल्फ एक अश्वेत बालिका थी। उसका पालन–पोषण बेहद प्रतिकूल परिस्थितियों में हुआ। चार वर्ष की उम्र में ही उसे डबल निमोनिया हो गया था। उसके बाद काला–बुखार होने से उसे पोलियो हो गया और इसके लिए उसे पैरों में ब्रेस पहननी पड़ी। वह ग्यारह वर्ष की उम्र तक बिना सहारे के चल–फिर भी नहीं सकती थी लेकिन उसने एक सपना पाल रखा था कि उसे दुनिया की सबसे तेज़ धाविका बनना है। डॉक्टरों के मना करने के बावजूद विल्मा ने अपने पैरों की ब्रेस उतार फेंकी और स्वयं को मानसिक रूप से तैयार कर अभ्यास में जुट गई। अपने विश्वास को उसने इतना ऊँचा और दृढ़ बनाया कि असंभव सी लगने वाली बात को पूरा कर दिखलाया। उसका एक साथ तीन स्पर्धाओं में स्वर्ण पदक प्राप्त करना सिर्फ उसकी तेज़ गति का प्रमाण नहीं था अपितु इस बात का भी प्रमाण था कि यदि व्यक्ति में पूर्ण आत्मविश्वास है तो उसकी शारीरिक बाधाएँ भी दूर होने में देर नहीं लगती।

हमारे विकास में सबसे बड़ी बाधा है आत्मविश्वास का अभाव न कि शारीरिक बल की कमी और विकलांगता या आर्थिक अभाव। मन–मस्तिष्क को कभी विकलांग मत होने दीजिए। आपका उत्कट आत्मविश्वास असंभव को संभव बना देगा। वैसे भी यदि आप स्वयं अपने पर विश्वास नहीं करेंगे तो और कौन आप पर विश्वास करेगा? यहाँ एक प्रश्न उठता है कि यदि व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी है तो इसको कैसे दूर किया जाए? इसके लिए ध्यान–साधना अथवा संकल्प शक्ति योग का सहारा लिया जा सकता है। सकारात्मक भावधारा का निर्माण भी लाभदायक है। आत्मविश्वास की प्राप्ति और उसे सुदृढ़ करने के लिए शांत–स्थिर होकर निम्नलिखित स्वीकारोक्तियाँ अथवा प्रतिज्ञापन करें:

1. मैं असीम शक्ति का स्रोत हूँ।
2. मैं अपनी असीम अंतःशक्ति द्वारा हर कार्य करने में समर्थ और सक्षम हूँ।
3. मैं आत्मविश्वास तथा उत्साह से परिपूर्ण हूँ और हर कार्य में सफलता प्राप्त करता हूँ।

इन स्वीकारोक्तियों अथवा वाक्यों को बार–बार दोहराने से आपमें एक नई ऊर्जा का संचार होने लगेगा और आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि होगी।

कई बार छद्म आत्मविश्वास या आत्मविश्वास की भ्रांति के कारण अहंकार पैदा हो जाता है अतः इस दिशा में सचेष्ट रहें। अहंकार हमारे आंतरिक बल को नष्ट कर हमारे आत्मविश्वास के स्तर को कमज़ोर कर देता है अतः अहंकार से बचने के लिए आस्तिकता की ज़रूरत है। हर कार्य को यथासंभव निष्काम भाव से सम्पन्न कर उसकी सफलता के लिए ईश्वर के प्रति कृतज्ञता भी होगी तो न तो अहंकार ही सिर उठा सकता है और न आत्मविश्वास ही कमी कमज़ोर पड़ सकता है। बहरहाल आत्मविश्वास बनाए रखना ज़रूरी है और इसके लिए आस्तिक भी बनना पड़े तो घाटे का सौदा नहीं लेकिन आस्तिक भी बनें तो पूर्ण आत्मविश्वास के साथ। आधे–अधूरे आत्मविश्वास से न तो भौतिक सफलता ही संभव है और न आध्यात्मिक उन्नति ही।

फोन नं. 09555622323 srgupta54@yahoo.co.in

## अपने मूल्यों में विश्वास का तभी अर्थ है अगर उन मूल्यों की रक्षा के लिये आप साहस भी दिखा सकें

एक कसाई एक बड़ा छुरा लेकर गाय के पीछे भाग रहा था। गाय भी उस हत्यारे से प्राणों की रक्षा के लिये तेजी से भाग रही थी। यह संयोग कहिये स्वामी दयानन्द वहीं से जा रहे थे। उस छुरे वाले कसाई ने स्वामी जी से पूछा—आपने गाय को यहां से भागते हुये तो नहीं देखा । स्वामी दयानन्द बोले——हां बिलकुल देखा है। पर बताउंगा नहीं चाहै कुछ कर ले।

# God in India and goodness in China

**Bhartendu Sood**

After spending a few days in China, when I tell any inquisitive friend that there is nothing like religion in China, he squirms disdainfully has conjures up an image of Chinese society which is anything but not good. Reason not many of us know the difference between an organized religion and natural *'dharma'*.

It is true that Chinese by and large do not observe any organized religion as we do in India but natural dharma whose centre points are truth, love, compassion, non violence, forgiveness, patience, tolerance, cleanliness of self and the environment, righteous conduct in its true sense prevail there when I go by my own experiences and observations, during my twenty days stay in different cities over there.

All vehicles move in their respective lanes at moderate speed with no honking though China is having more population than India. It can't be achieved only by making rules and their strict enforcement. If it were so, our Indian cities should have a highly disciplined traffic as we frame more rules and laws than any other country in the world, but unfortunately it remains a pious wish here. This is possible only when people have cultivated in them the virtue of patience and self control which forms an inseparable part of *dharma*.

While using an elevator at Shanghai Metro Station my foot slipped and two bags I was carrying not only rolled down but from one bag, that was open, my articles like wallet etc came out and fell on the floor below. One boy and girl, who later I came to know were going on a leisure trip, not only restored the bags with all articles but departed only after getting me the ticket for my next destination Hangjhou.

After reaching Xian city by train, I took a bus for the place where I had booked a hotel. After getting down at the Bus stop, I was looking for a man who could guide me. Soon I could get a gentleman who after reading the address, given on my booking confirmation copy, asked me to accompany him. Since he was quite young, I was finding it difficult to keep pace with him. He moved back and took my bag. Most of our communication was by facial expressions only as he didn't know English. Now I was in the hotel and he went back after our handshake and my expression of thanks. When I showed my copy of the

hotel booking to the lady receptionist, she told that my booking was in their sister concern which was about 300 Meters from there. As I came out, I saw the man who had helped me, rushing back to me. "I am sorry, this is not your hotel, Come with me". Having said this he again took my bag and now we were moving briskly. Soon I was at the right place. He was in a hurry, probably to reach his place of work, so he raised his hand to take leave from me without waiting for my gesture of thanks.

Next day I was with a Professor in one of the Universities who knew very good English. We had a long session talking about our countries. As I was about to take leave, I commented, "We read that there is no religion in China but I have seen people endowed with the virtues which are integral part of dharma". He chuckled and said philosophically, "Thanks for your compliments. But, human values have been there since man stepped on this planet. Without these, humanity would not have survived for so long" and he departed..

# आचारः परमो धर्मः—शुभ आचरण ही व्यक्ति को धार्मिक बनाता है,

एक राजपुरोहित थे व अपने अथाह ज्ञान के कारण राज्य में बहुत प्रतिष्ठित थे। बड़े—बड़े विद्वान उनके प्रति आदरभाव रखते थे। यही नहीं राजा भी उनका बहुत सम्मान करते थे व उनके राज दरबार में आने पर उठ कर उनको आसन देते थे। परन्तु उन्हें अपनें ज्ञान का लेश मात्र भी अभिमान नहीं था। एक बार राजपुरोहित के मन में यह जानने की लालसा उठी कि उन्हे जो यह सम्मान मिलता है, वह अच्छे चरित्र के कारण है या ज्ञान के कारण। इसके समाधान के लिये उन्होने मन्त्री से मिलकर एक योजना बनाई।

योजना को कियान्वित करने के लिये राजपुरोहित राजा का खजाना देखने के लिये गये। खजाना देखकर लोटते समय उन्होने खजाने से पाचं बहुमूल्य मोती उठाकर अपनी जेब में डाल लिये। खजाचीं हैरान थां। क्या इतना प्रतिष्ठित व्यक्ति भी लोभी हो सकता है? उसे विश्वास नही हो रहा था। खैर वह चुप रहा। दूसरे दिन राजपुरोहित ने फिर वैसे ही किया। अब तो खजाचीं के मन में जो भी श्रद्धा राजपुरोहित के लिये थी, क्षीण हो गई। तीसरे दिन जब राजपुरोहित ने फिर वैसे ही किया तो खजाचीं ने सब कुछ राजा को बता दिया। राजा ने यह सुना तो हैरान थे। उनके मन में जो भी आदरभाव राजपुरोहित के लिये था वह चूर चूर हो गया।

अगले दिन जब राजपुरोहित सभा में आये तो पहले कि तरह न तो राजा अपने सिंहीसन से उठे और न ही उन्हीने राजपुरोहित का अभिवादन किया।
राजपुरोहित को सब कुछ समझते देर न लगी। इससे पहले राजा कुछ पूछते राजपुरोहित ने राजा को स्वयं ही बता दिया कि उसने यह जानने के लिए कि चरित्र उंचा है या ज्ञान, मन्त्री को विश्वास में लेकर यह खेल रचा था। आज उसे पता लग गया ही कि चरित्र के बिना ज्ञान का कोई मूल्य नहीं। उसने बहुमूल्य मोती जेब से निकालकर राजा को लोटा दिये।

यह कहानी एक गहन विषय की और ले जाती है। जब महात्मा बुद्ध का प्रार्दुभाव हुआ तो मारत में ज्ञान की बातें करने वाले तो बहुत थे पर उनका आचार व्यवहार खत्म हो गया था। धर्म गुरूओं में व मन्दिरों में भी धर्म व चरित्र दोनो खत्म हो गए थे। स्वार्थी व लोभी पण्डितो के कारण धर्म का बहुत घिनोना रूप सामने आ रहा था। अग्नीहोत्रों में पशुओं की बली तक दी जाती थी। निम्न वर्गो के लोगों को वेदों से दूर कर दिया गया था। ऐसे मे महात्मा बुद्ध ने सोचा आत्मा परमात्मा की बात तो बाद में हो,पहले तो आचार व्यवहार से विहीन हुए धर्म में आचार व्यवहार को वापिस लाना होगा। इस तरह जन्म हुआ बोद्ध धर्म का व जब महात्मा बुद्ध ने महात्मा मनु की इस बात को आचारः परमो धर्मः—— व्यक्ति धार्मिक शुभ आचरण से बनता है, को अपने द्वारा शुरू किए धर्म की मुख्य बात कही, तो वह धर्म हर किसी को छूने लगा और बहुत तेज़ी से दूर—दूर तक देशे विदेश में फैलने लगा।

आज हमारे अधिक धार्मिक सस्थानो का जिनमें आर्यसमाज भी आते हैं यही हाल है। ज्ञान की बातें तो बढ़ चढ़ की जाती हैं पर अगर आप इन ज्ञान की बातें करने वालों का आचार व्यवहार व आचरण देखेंगे तो आपको शर्म आयेगी व एक मिन्ट के लिये यह सोचने पर मजबूर होगें—— क्या यही हैं वे लोग जिनके द्वारा धर्म का पाठ लेकर, आप अपने जीवन को सुधारने आते हैं? जब आप यह विचार करेगें कि मन्दिर तो वह स्थान होता है, जिसमें हम अपने भौतिक अस्तित्व से उपर को अनुभव करते हैं, अर्थात जहां व्यक्ति अहंकार, आसक्ती,लोभ, कोध से स्वतन्त्र हो जाता है, शत्रु में भी मित्र का आमास होता है। मन शांत हो जाता है — तो ये स्थान आपको मन्दिर कहलाने के लायक लगेगे ही नहीं।

और अधिक सोचने पर आपको मालुम होगा कि इन सब बुराईयों के पीछे एक राक्षसी ताकत जो काम कर रही है वह है——जरूरत से अधिक मन्दिरों में आ रहा पैसा, जिसमें की अधिक मात्रा गन्दे धन की होती है, मन्दिरों के प्रवन्धन में खराब चरित्र वाले लोग व घटिया चरित्र के धर्मिक गुरू व पण्डित, पुरोहित।

क्या दायित्व बनता है आपका ऐसी स्थिती मे,

1 दान देते समय सोचें——क्या आपका धन ठीक जगह जा रहा है? ज़रूरतमन्द को दें न की उनको जिनके पास पहले से ही बहुत पैसा है व जो संग्रह करेगे। इससे अच्छा है आप ही संग्रह कर लें, ठीक समय आने पर आप को ज़रूरतमन्द रोगी, विपदा में फंसा व्यक्ति, गरीब विद्यार्थी अवश्य मिल जायेगा जिसे आप सग्रंह किया धन दे सकते हैं। ऐसी संस्थाओं को धन दें जो कार्यशील हैं, समाज के लिये कुछ कर रही है। कर्मकाण्डों के के लिये कभी धन न दें।

2 जब आप ने दान देना हो तो वहां दे जिसे आप देख सकते हैं। आप अपने आसपास अस्पताल, सरकारी स्कूल का चक्कर लगायेगें तो बहुत ज़रूरतमन्द रोगी, विद्यार्थी व विपदा में फसें व्यक्ति आप को मिल जायेगें व एक यह ऐहसास भी होगा कि भगवान ने हमें करोड़ो अरबों से अच्छा बनाया है। दान कभी भावुक होकर व किसी के कहने पर न दें। संस्था की पिछली **reputation** को न देखें, देखने वाली क्या बात है कि आजकल संस्था क्या कर रही है। जहां दानो की बड़ी–बड़ी घोषना हो वहीं भी दान न दें। दान की घोषना करना ही गल्त प्रथा है।

3 विज्ञापन, पत्रिकाओं को पढ़कर कभी भी गउशाला, अतिथीयज्ञ, बहुकूण्डीय यज्ञों, गुरूकुलों के लिये पैसा न भेजें। जो सचमुच कर रहे हैं उनको पैसा मागनें की आवश्यकता नहीं होती वहां साधन अपने आप बनते जाते हैं। आपने किसी गरूद्वारे वाले को पैसे मांगते नहीं देखा होगा जब की हमारे सिक्ख भाई बहुत श्रद्धा प्रेम से सेवा करते हैं व भोजन खिलाते हैं।

4 कभी किसी बाबे, महन्त, महाराज, विज्ञापनो द्वारा ख्याती प्राप्त धर्मगुरू, पण्डित को दान दक्षिणा न दें। हां, अगर आप ने कोई कर्मकाण्ड जैसे संस्कार, हवन,कथा, पूजा करवाई हे तो उसकी **professional fee** देना अलग बात है। परन्तु साथ ही, तपस्वी व त्यागी विद्वान, महात्मा व सन्यासी की सब जरूरतों का ध्यान रखना हमारा धर्म है।

5 आज के हालात को देखते हुये किसी मन्दिर, भवन, यज्ञशाला, गउशाला के लिये दान न दें। अगर गाय के लिये बहुत आदर है तो स्वयं गाय पाल लें। अगर आप गाय नहीं रख सकते तो विश्वास कीजिये दूसरा भी नहीं रखेगा। अगर आप अपने चारों और नजर दोड़ायेगें, तो देखेगें कि जो समाज,भवन आपके बजुर्गो ने बहुत श्रद्धा से समय व धन देकर बनवाये थे, उन में कुछ बन्द पढ़े हैं, कुछ बन्द होने के कागार पर हैं, कुछ आप के लिये बन्द हैं क्योकि किसी ने नजायज कब्जा कर रखा है व कुछ अनैतिक गतिविधीयों के गढ़ बन गये हैं।

भारत का इतिहास बताता है कि देश को गुलाम रखने में सब से बढ़ा हाथ हमारे धर्म गुरूओं का व पण्डितो का था व आज भी स्थिीति सुधरी नहीं है बल्कि पहले से बिगड़ी है। इस लिये हमे सोचकर चलना होगा।

सदा याद रखें कि मोहम्मद गज़नी ने सोमनाथ के मन्दिर को इस लिये निशाना बनाया था क्योकि उस मन्दिर में सब से अधिक धन, दौलत,हीरे व जवाहारात थे व मोहम्मद गज़नी को उस मन्दिर तक पहुचांने वाला वहां का एक पुजारी था जिसने धन के लोभ में यह सब किया, यह अलग बात है कि लूटने के बाद मोहमद गज़नी ने उस पुजारी को भी मार दिया। पर आज किसी मोहमद गज़नी को बाहर से आने की जरूरत नही, हमारे यहां ही बहुत हैं। मजे की बात यह है कि ये सेना, घोड़ो व हथियारों के बिना ही सब कुछ कर रहे हैं।


# प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

**PARKASH AUSHDHALYA**

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
**Tel.: 0172-2708497**

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

# महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

महर्षि दयानन्द बालआश्रम की स्थापना फरवरी 2013 में चण्डीगड़ के साथ लगे शहर मोहाली में की गई थी। प्रभु की असीम कुपा व आप सब के सहयोग से आज इस में 10 बच्चे व दो वार्डन हैं। इसका निरन्तर विकास हमारा उदेश्य है। **इसी दिशा में दिल्ली निवासी श्रीमति कोशल्या बुटेल सूद ने अपनी बहन स्व श्रीमति कान्ता सूद की याद में एक लाख की राशी देकर एक और कमरे का निर्माण करवाया है।** आप भी ऐसे पुण्य के भागी बन सकते हैं

**Ladies Club State Bank of India, Regional Office, Chandigarh ने सभी बच्चों को बाटा के जूते दिये**

| | |
|---|---|
| धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह | धार्मिक सखा 500 प्रति माह |
| धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह | धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह |
| धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह | धार्मिक साथी 50 प्रति माह |

**A/c No. : 32434144307**
**Bank : SBI**
**IFSC Code : SBIN0001828**

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

**योगिंदर पाल कौड़ा,** **नरेन्द्र गुप्ता** **लेखराम ( +91 7589219746 )**

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

**निमार्ण के 60 वर्ष**

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

# गैस ऐसीडिटी
# शिमला का मशहूर
# कामधेनु जल

**(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)**

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Mumbai-23095120,, 9892904519, 25412033, 25334055, Banglore-22875216, Hydrabad-24651472, 24751760, Kolkata-9339344231, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Indore-982633800, Gurgaon-2332988, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790, Yamunanagar-232063, Kanpur-2398775, Nainital-235489, Mukerian-245113, Ujjain-2562140, Porbander-9825275198, Ajmer-2431084, Kota 7597306851, Jhansi-244163

**Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.**

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

**0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in**


## जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

**Augastya**

**Pragya**

**Prakhyatss**

**Astha**

**Anil Soni**

**Latika Puri**

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

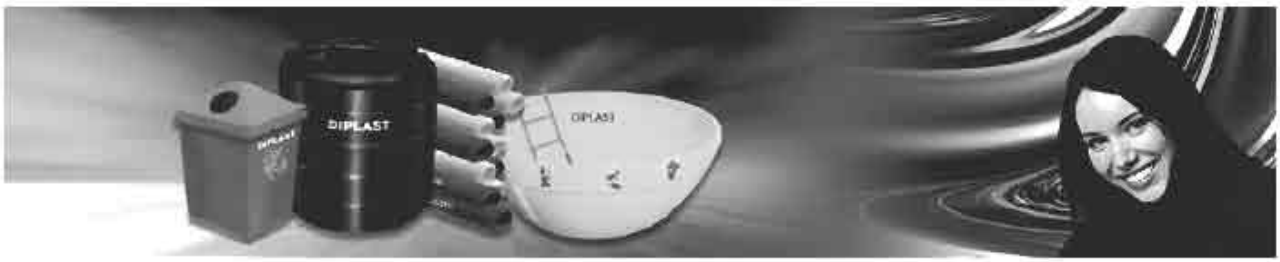

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

# विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

**Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh**
**9217970381 and 0172-2662870**